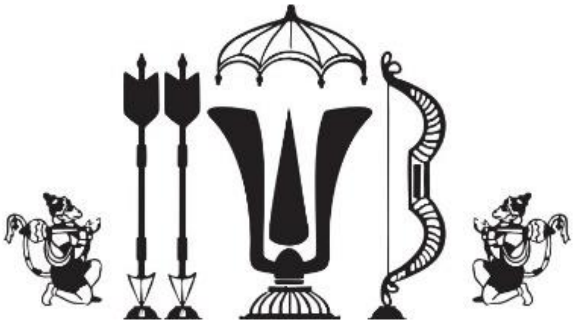


॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

॥ श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ॥

॥ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासाय नमः ॥

॥ श्रीमते अग्रदेवाचार्याय नमः ॥

॥ पुराणेतिहासोक्त धनुर्बाणाङ्कन प्रमाणः ॥

This text has been prepared by
Vishal Pandey (B.Tech IIT Kanpur)
with the blessings of
Chitrakūṭa Tulasīpīṭhādhiśvara
Jagadguru Rāmānandāchārya
Śrī Svāmī Rāmabhadrāchārya

सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे श्री गुरु परम्पराम् ॥

पुराणेतिहासोक्त धनुर्बाणाङ्कन प्रमाणः

ब्रह्माण्ड पुराणे कोशलखण्डे श्रीराम गीतायाम्

श्रीरामचन्द्र वाक्यं वशिष्ठं प्रति।

धनुर्बाणादि चिह्नानां धारिणं तिलकान्वितम्।
तुलसीकाष्ठ मालाढ्यं तं जानीतु सु वैष्णवम्॥

ब्रह्माण्ड पुराण कोशलखण्ड श्रीरामगीता में श्रीरामजी का वचन श्रीवशिष्ठजी से है कि जो धनुर्बाणादि चिन्हों को धारण करने वाला उर्ध्व पुण्ड्र तिलक से युक्त तुलसी काष्ठ माला को धारण करने वाला है उसे सुन्दर वैष्णव जानना चाहिये ॥

महारामायणे ऐकोनपञ्चाशत्सर्गः

श्रीशिववाक्यं पार्वतीं प्रति

भाले च रम्यतिलकं विवरे च दीप्तं रामाङ्घ्रि चिह्नसहितं श्रीचूर्णमध्ये।
कण्ठे तथा तुलसिदामलसद्भुजे वै तप्तेनबाणधनुषाङ्कित राम भक्तः॥

जिसके भाल में उज्ज्वल अर्थात श्वेत वर्ण के श्री रामपादाकृति युक्त तथा मध्य में श्री चूर्ण अवस्थित है, जिसके कण्ठ में तुलसीमाला सुशोभित है और दोनों में भुजाओं में धनुष और बाण के चिन्ह अङ्कित हैं वे ही सत्य राम भक्त हैं।

ये जापका भागवताश्चतपस्विनो ये पूजारताः सुचरिताश्च विरागयुक्ताः।
ज्ञानार्णवास्तिलकदामधरायशस्विनस्तीर्थाटिनःशुभगुणाश्शुभकर्मयुक्ताः॥

सर्वैर्गुणैरपि च संयमनेमयुक्तोनिःकल्मषः सकलसिद्धिकरश्चनित्यम् ।
योनाङ्कितोधनुशरैर्नचराजमन्त्रैर्नोपासको न स जनो रघुन्दनस्य ॥

भगवान शङ्कर आगे कहते हैं कि जो आपका अर्थात राममन्त्र छोड़कर अन्य मन्त्रों का जाप करते हुए भागवत अर्थात वैष्णव धर्म को धारण कर पूजा में रत है, जिसका सुन्दर चरित्र है और वैराग्य से युक्त है, ज्ञान का समुद्र है, तिलक माला धारण करने वाला तथा यशस्वी और तीर्थाटन करने वाला है और सभी शुभ गुणों और कर्मों से युक्त है तथा संयम नियम आदि व्रतों से युक्त है और निष्कलमष अर्थात सभी पापों से रहित है तथा सभी सिद्धियों से नित्य भूषित भी है परन्तु यदि श्रीरघुनन्दन रामभद्र के दिव्यायुध धनुष और बाण से उसकी भुजाएं अङ्कित नहीं है और रामतारक षडक्षर मन्त्रराज से वह युक्त नहीं तो वह व्यक्ति न ही श्रीरघुनन्दन का उपासक और न ही उनका जन कहलाता है।

सर्वसंस्कारमध्येतु धनुर्बाणोमहावरः ।
स्वामिन्नादौत्वयाप्रोक्तः कथमित्यभिधीयते ॥

धनुर्बाण के अति उत्कृष्ट महत्त्व को सुनकर पार्वतीजी शिव जी से पुनः प्रश्न करती हैं कि हे स्वामिन् ! आपने सभी संस्कारों में धनुषबाण को ही सबसे श्रेष्ठ बताया इसका कारण क्या है ?

नित्यं प्रियः प्रियतरोरघुनन्दनस्य बाणोधनुर्विमलमन्त्रषडक्षरश्च ।
बाले तदेव सकलेषु च चिह्न मध्ये श्रेष्ठं महाधनुशरं समुपासकेषु ॥

भगवान शिव जी बोले - हे बाले ! धनुषबाण तथा विमल षडक्षर मन्त्रराज श्रीरघुनन्दन को नित्य प्रिय से भी अति प्रिय हैं इसी कारण रामोपासकों के लिए सभी चिन्हों में धनुषबाण का संस्कार श्रेष्ठ है।

ध्याने जपे विविधिपाठरताश्चनित्यं पूजारताः षडधिकैर्दशभिः प्रकारैः।
एतद्धनुःशरविवर्जित कास्तुकूर्यू रामः प्रसीदति कदापि न चैव तेषाम्॥

ध्यान में तथा जप में और विविध प्रकार के स्तोत्रादि पाठ करने में तत्पर और सोलह प्रकार की पूजा (षोडशोपचार)के अधिकारी होने पर भी यदि धनुष और बाण के संस्कार से रहित कोई है तो उसके इन कृत्यों से श्रीरघुनाथ जी कदापि(कभी भी) प्रसन्न नहीं होते।

यज्ञं च तीर्थगमनं पितृदेवसर्वं कुर्वन्ति कर्मशुभकं श्रुतयोवदन्ति।
येनाङ्किता धनुशरैर्विफलं च सर्वं येचाङ्किताधनुः शरैश्च फलं सहस्त्रम्॥

वेद(श्रुति) द्वारा प्रतिपादित यज्ञ, तीर्थाटन, पितृतर्पण आदि जितने शुभ कर्म हैं वे सभी धनुर्बाण के अङ्कन के बिना निष्फल अर्थात व्यर्थ हो जाते हैं और धनुष-बाण से अङ्कित करने पर यही कर्म सहस्त्र गुना फलित हो जाते हैं।

चक्रात्फलं शतगुणं धनुषः शरस्य यश्चाङ्कितोऽपि स च रामजनाग्रगण्यः।
सारूप्यमेवलभते किलतत्क्षणेवै रामः प्रियः प्रियतरोऽनुदिनं च मह्यम्॥

भगवान शङ्कर माता पार्वती से कहते हैं कि हे शिवे ! शङ्ख और चक्र से शतगुण अर्थात सौगुना अधिक महत्त्व धनुषबाण के अङ्कन का है। जो जन श्रीराम जी के दिव्यायुध धनुष और बाण से अङ्कित होते हैं वे श्रीराम जी के जनों में अग्रगण्य (श्रेष्ठ) होते हैं। जिस समय कोई धनुष बाण से अङ्कित होता है उसी क्षण वह श्रीराम जी के सारूप्य मुक्ति को प्राप्त कर लेता है और प्रतिदिन श्रीराम जी उसके लिए प्रियतर से भी महत्प्रियतर हो जाते हैं।

धनुर्बाण धारण विधिः

श्रुत्वा महाद्भुतमिदं धनुषः शरस्य माहात्यमेव विमलंसज्जनप्रियं च।
धन्यावयं जगति धन्यतराश्चनित्यं कस्मात्करोतिग्रहणं विधिना च केन॥

माता पार्वती भगवान शिव से बोलीं - महाद्भुत विमल सज्जनों को अति प्रिय यह धनुषबाण के माहात्म्य को सुनकर जगत में अपने जन्म को धन्यातिधन्य मैं मानती हूँ परन्तु धनुष-बाण संस्कार किससे ग्रहण करना चाहिए और किस विधि से ग्रहण करना चाहिए ?

यः सद्गुरुर्जगति यस्य गुरुप्रभावो रामस्य चैव सततं समुपासकोयः।
सम्पूजयेत्सुविधिना रघुनाथबाणं बध्वाकराञ्जलिमथो प्रणति प्रकुर्यात्॥

भगवान शिव जी बोले - जगत में जिसका अत्यन्त प्रभाव हो ऐसे सद्गुरु और श्रीरामजी की सतत उपासना करने वाला जो पुरुष हो वह श्रीराम जी के आयुध धनुष बाण को सुन्दर विधि से पूजन करे और फिर दोनों हाथ जोड़कर धनुष और बाण को प्रणाम करे।

तेन प्रसन्नमनसा समुदारबुद्ध्या तप्तन्धनुः शरमिदं भुजयोः प्रकुर्य्यात्।
पूजां पुनः प्रकुरुतेविविधैश्चरत्नैस्तस्मिन्क्षणेभवति जीवन एव मुक्तः॥

तब गुरु प्रसन्न मन होकर उदार बुद्धि से शिष्य के भुजा के मूल में यह धनुष और बाण को तपा कर अङ्कित करे। इसके पश्चात शिष्य विविध प्रकार से श्रीगुरुदेव की पूजा करे इस प्रकार धनुष-बाण संस्कार होने पर पुरुष उसी क्षण जीवन मुक्त हो जाता है।

वामे करे च धनुषा च शरेण सव्ये यश्चाङ्कितोहि मनुजोनरलोकधन्यः।
तस्मैनमन्ति शिरसा द्रुहिणादिदेवास्तद्दर्शनेन मनुजाकिल कल्मषघ्नाः॥

जिस पुरुष के बाएँ भुजा में धनुष और दाहिने में बाण अङ्कित होता है वह मनुष्य नर लोक में धन्य है और ब्रह्मादि देव उस पुरुष को नमस्कार करते हैं और उस पुरुष के दर्शन से मनुष्य के पाप का नाश होता है।

त्वत्तोविधिं शृणु शिवे कथयामि सर्वं बाणं धनुश्च वसुधातुमयम्प्रकुर्य्यात्।
कृत्वायथोक्तविधिनासकलांप्रतिष्ठां संस्थापयेद्ध हनुमान च गणेश गौर्य्यौ॥

भगवान शिव बोले - हे शिवे ! धनुष और बाण संस्कार की सम्पूर्ण विधि को मैं तुमसे कहता हूं। प्रथम वसुधातुमय अर्थात अष्टधातु से धनुषबाण निर्माण करें फिर यथोक्त विधि से धनुष बाण की प्रतिष्ठा करके श्रीगणेश जी और गौरी तथा हनुमान जी का संस्थापन करें अर्थात आवाहन सुपूजन करें।

अग्नौविशुद्ध हविषा विविधैः सुगन्धैर्होमं सुवेदविधिना शरशार्ङ्ग मन्त्रैः।
अष्टोत्तरंशतमथो जुहुयात्सुभक्तो रामंस्मरेद्हृदितदाजनकात्मजाढ्यम्॥

सुन्दर प्रज्ज्वलित अग्नि में विविध प्रकार के शुभ सुगन्धि सम्पन्न हविषों द्वारा सुन्दर वैदिक विधि से शरशार्ङ्ग (धनुषबाण) के मन्त्रों से १०८ बार आहुतियां दें। इसके साथ ही भक्ति पूर्वक हृदय में जगच्छरण्य प्रभु श्रीराम सहित वात्सल्यरससम्पन्ना श्रीजनकात्मजा जानकीजी के दिव्य स्वरूप का ध्यान करें।

तप्तं धनुश्शरमथोखलुतत्र होमे प्रेम्णाङ्कितं सुमनसा च गुरुः प्रकुर्य्यात्।
देशेषुचैव सकलेष्वपि सर्व काले वर्णाश्रमाश्च सकलाङ्कित पुण्य पुञ्जाः॥

हवन के पश्चात उसी हवन की अग्नि में धनुष बाण को तप्त कर श्रीगुरुप्रेम सहित पवित्र मन से शिष्य को अङ्कित करें अर्थात धनुष बाण की छाप दें और इस धनुष बाण के अङ्कन का सर्वदेश तथा सर्वकाल में लेने का विधान है और ब्राह्मणादि चारों वर्ण तथा ब्रह्मचर्य्यादि चारों आश्रम इस धनुष और बाण से अङ्कित होने पर पुण्यों के पुञ्ज (पुण्य समूह) कहाते हैं।

> *श्रीरामसंस्कारविवर्जिता ये निष्पुच्छशृङ्गाः पशवो नरास्ते।*
> *शक्ता न वेदा अभिवर्णितुंयत्त्वत्तोमयाख्यातमविस्तरेण॥*

भगवान शिव कहते हैं कि श्रीराम जी के संस्कार से जो वर्जित है वे पुरुष बिना पूँछ और सीङ्ग वाले पशु के समान हैं। हे पार्वती ! धनुष बाण की महिमा का जो वर्णन जो मैंने तुमसे सङ्क्षिप्त रूप में किया है इस धनुष बाण के महत्त्व को विस्तार पूर्वक वर्णन करने में वेद भी समर्थ नहीं हैं अर्थात इस धनुष बाण के अङ्कन की अनन्त महिमा है।

इति श्रीमन्महारामायणे उमामहेश्वर संवादे रामोपासक संस्कार कथन नामैकोनपञ्चाशत्सर्गः